

पात्र-परिचय

पुरुष—

- १ हिमालय—पर्वतराज, हेमन्त ऋषि, गौरीक पिता ।
- २ नारद—देवर्षि, देवज्ञ ।
- ३ सप्तर्षि—शिवक दूत, घटक ।
- ४ शिव—महादेव ।
- ५ श्रीरामचन्द्र—भगवान् राम ।
- ६ ब्रह्मा—विधाता ।
- ७ इन्द्र—देवराज ।
- ८ विष्णु—प्रसिद्ध देवता ।
- ९ कामदेव—महादेवक ध्यान तोड़निहार ।



स्त्री—

- १ मनाइति—मएना, गौरीक माय ।
- २ गौरी—हिमालयक पुत्री पावती ।
- ३ रति—कामदेवक पत्नी ।



गौरीस्वयंवर-नाटिका

श्री:

पौत्री गौरी-स्वयंवर, कान्हाराम बखान ।
 गौरी-शङ्कर करहि शुभ, पढ़हि सुनहि मतिमान् ॥१॥
 सज्जन जनकी परम प्रिय, सुनहि बाइत हुलास ।
 कुटिल मुख अज्ञान जड़, सो करिहहि उपहास ॥२॥
 पुनः,
 श्री गुरु पद पङ्कज सुमरि, हृदय सुमरि सियराम ।
 शारव^१ शेष महेश अज, पुरिअ सकल मनकाम ॥३॥
 वेद, विप्र, मुनि नारद, गुरु^२, सनकादि, गन्धर्व ।
 सम्भू चरणरज वशि कैं, देहु सुमति सुनि सर्व ॥४॥
 विष्णु हरन संकटतरन, सिद्धकरन गजनाह^३ ।
 सुमति उक्ति बर देहु मोहि, बरनी गौरि विवाह ॥५॥
 लम्बोदर करिवरवदन^४, एकरदन^५ अभिराम^६ ।
 पुरिअ मनोरथ मोर प्रभु, प्रणवत कान्हाराम ॥६॥

संगल गीत गणेशक--१

जय जय गिरिजा तनय गणेश ।
 लुअ गुन बरनि सकहि नहि शेष^७ ॥
 लम्बोदर लुअ गुण अनन्त ।
 सुर मुनि पाय सकहि नहि अन्त ॥

१—शारवा, शेषनाग, महादेव ओ परब्रह्म । २—वेदता ओ सनक आवि ऋषि (ब्रह्माक पुत्र) । ३—गणेश । ४—हाथीक मुहवाला । ५—एकटा वीतवला । ६—सुन्दर । ७—शेषनाग ।

कहँ लागि बरनो मनुज^५ शरीर ।
गणनायक हर भारत^६ पीर ॥
गोचर^७ कर श्री कान्हाराम ।
विघ्न-हरण शुभ कर सभ ठाम ॥

भगवतीक गीत मालवरागे--२

जय जय! दुर्गा दुर्गे प्रताप ।
तुअ भुजवल डर दानव काप ॥
सिंह चढ़लि कर लेल कुपाण^{११} ।
कोपि चलल रण रूप भयान^{१२} ॥
दानव-वल दलि^{१३} कैल ओरान^{१४} ।
पिउल रुधिर नहि भेल अघान ॥
रसत^{१५} पसार दसन^{१६} विकराल ।
ऐसन अरिदल^{१७} कैल हत^{१८} काल ॥
चण्ड मुण्ड रण खण्डल डारी ।
सुम्भ^२ निमुम्भ जुगल रण मारी ॥
महिष असुर रण कएल प्रकोप ।
ताहि १२ निपाति^३ कएल अलोप^४ ॥
असुर निपाति सुरहि सख देल ।
तुअ रण विजय विदित जग भेल ॥
कान्हाराम भन गोचर बानी ।
सदा सभा सुभ करिय भयानी ॥

५ - मनुष्यक बेहूवाला । ६ - दुर्लोक पोड़ा हरत सखि । १० - वर्णन ।
११ - तहआदि । १२ - डराओन । १३ - मारि । १४ - अन्त । १५ - जोड़ ।
१६ - धौत । १७ - एहिकुपे शत्रुक दलक । १८ - हत्या । १९ - तकरा ससाव ।
२० - अदृश्य (मैथिली मे 'अलोपित' शब्दक अर्थ सुप्त ओ 'अपयप्ति' शब्दक
अर्थ पर्याप्त होइछ) ।

१—जै जै । २—सम्भु । ३—नीपाति ।

कमलाजीक गीत मालवरागे--३

जय जय! कमला विमल मुख बारि^{११} ।
१२ विजु-भगिनी जे उदधि-^{१३}कुमारि ॥
कोड़ि पहाड़ धार बड़ नीर ।
दरस परस^{१४} जल हर सभ पीर ॥
१५ ताल सरोवर खण्डन कारी ।
... .. ५
... ..

(श्लोक)

शाके वेद-पडद्रि^६ ब्रह्म-मिलिते मासि शुभे माघमे,
७ पक्षे^७ शुभे सु सुधाकरस्थ दिवसे चन्द्रस्थ ८ तिथी ।
गौरी-९ सम्भु-विवाह-सुख-कथा प्रारम्भ भाषाकु^९
काम^{१०} नाटकनृत्ययो कथयते ॥ गौरी शिवा पातु वः ॥ १॥

दुनरपि मालव रागे - ४

ग्रह^१ सत संवत महि^{१२} हजार ।
एक कमी दए करय विचार ॥

१७९४ शाके वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, सोम दिन, सप्तमी तिथि मे
गौरी-शंकर विवाहोत्सव-कथा के भाषामे प्रारम्भ कय नाटक ओ नृत्य मे यथे-
च्छ रूप से कहेत छी ओ गौरी-शंकर अहाँलोकनिक रक्षा करथु ॥ १॥

२१—जल । २२—चन्द्रमाक बहिन (कमला=लक्ष्मी ओ चन्द्रमा समुद्रे से
बहरायल छथि) । २३—समुद्रक पुत्री । २४—जलक दर्शन ओ स्पर्श सभ पीड़ा
के दूर कर देछ । २५—तडाग । २६—नओ (ग्रह) सय ओ एक हजार=
१९०० मे एक कमी कय=१८९६ संवत् ।

४—जै जै । ५—(अभिहित) । ६—पडद्रि । ७—छीने । ८—तात्परित्यी ।
९—सम्भुवाह उत्सवकथा प्रारम्भ भाषाकुसं । १०—नाम । ११—कथयती ।
१२—महिति ।

मासव^{२७} मास पच्छ इजोर ।
^{२८}सागर-१३ तिथि दिन सिन्धु - किशोर^{२९} ॥
 मन दय वुसब सकल मतिमान ।
 मास साल तिथि दिन प्रमाण ॥
 कान्हाराम सुमरि जगदम्ब ।
 गौरिस्वयंवर केल आरम्भ ॥

दोहा

विमल^{३०} वंश 'गङ्गक' विदित, कायस्थ मैथिल जान ।
 हलधर दासक तनय^{३१} जो कान्हाराम मम नाम ॥१॥
 गोरि विवाह उछाह^{३२} जत, बरनो चरित बनाम ।
 सज्जन जन हाँ विनति मम, पढ़ब सुनब मन लाय ॥२॥
 रत्नोक सोरठा छन्द पुनि, दोहा गीत कवित्त ।
 मति अनुसार उचार करि, नाम नाटिका नृत्य ॥३॥

(पारवतीक जन्म लिख्यते^{३३} ।)

दोहा

दच्छ प्रजापति नृपति भये, जाप दान बड़ कीन्ह ।
 भाग दोन्ह सभ देव के, शिवक भाग नहि दोन्ह ॥१॥
 सती दक्ष-^{३४}कुमारि तब, गइ देखन मख^{३५} दान ।
^{३६}जोगानल तन जारेउ, देखि पतिक अपमान ॥२॥
 शिव-पद प्रीति पुनीत हित, जन्म लीन्ह पुनि आए ।
 निज इच्छा अवतार लिय, हिमगिरि सुता कह ए ॥३॥

२७-वैशाख । २८-सप्तम । २९-चन्द्र सोम ।

३०-पवित्र । ३१-पुत्र । ३२-उरसाह । ३३-लिखल जाइछ । ३४-दक्षक
 पुत्री सती । ३५-यत्न । ३६-योग सँ उत्पन्न अग्नि से देह जराय लेल ।

१-लीव ।

१३-तीथि ।

गीत मालवरामे--५

हिमगिरि भवन लेल अवतार ।
 हरखित नृपति सहित परिवार ॥
 उषव बघाव गेल नृपधाम ।
 घर घर हरप भरल भरि गाम ॥
 सोभा सुभग^{३७} देखल गिरिराज ।
 विचि^{३८} निरमाय सुता देल आज ॥
 देव-कन्या जनि लेल अवतार ।
 गुलकि^{३९} नित कर मंगल चार^{४०} ॥
 दान देधि कर विप्र^{४१} हुकारि^{४२} ।
 नित प्रमुदित^{४३} चित सुता मिहारि ॥
 कान्हाराम भन सुमरि भवानी ।
 पुरिअ मनोरथ निज जन जानी ॥

छन्द - ६

लीन्ह सति अवतार हेम-गिरिराज भवनहि जाय ओ ।
 तह सिद्धि सम्पति सकल सम्पद रहै नृप गृह छाये ओ ॥
 नित मोद परम आनन्द मङ्गल कश्त गिरिवरराज ओ ।
 तह आय मुनि सभ रास कीन्हो जहाँ छल^{४४} समाज ओ ॥
 यन सुमत^{४५} विकसित पवन^{४६} निम्नल तहि^{४७} हरप जयताप ओ ।
 आए छन^{४८} मृग भूय^{४९} गिरि र करए मोर शलाप ओ ॥

३७-सुन्दर । ३८-विधाता निर्माण कय । ३९-नित्य आनन्दित करैत ।

४०-मङ्गल गायक भाँट । ४१-ब्राह्मण के । ४२-आनन्दित मन ।

४३-पवतक समुदाय । ४४-फूल । ४५-हवा । ४६-ताहिठाम तीव्र ताप
 (दैविक, दैहिक ओ भौतिक) हरैत अछि । ४७-पक्षी ओ पशु । ४८-अधिक ।

२-हेम ।

३-हुकार । ४-छा ओ ।

गिरिराज घर पुर सगर घर घर होय मङ्गलगन ओ ।
कान्हाराम भन^१ समरि मन भल, गिरिजा दिअ घरदान ओ ॥

दोहा

हेमत मनाइन सहित नित, हरखित रहे अवास ।
सुतारूप अपरूप^२ लखि, दिन दिन बढ़त हुलास ॥१३॥
२ताहि समय रिखि नारद, मुनि किन्हो परवेश ।
ब्रह्मभवनसो गमन करि, चले जहाँ अचलेस^३ ॥१४॥

नारद प्रवेशक गीत मालवरागे--७

देख परवेश नारद मुनि सुनि ।
प्रमुदित^४ हेमत-नगर^५ मन गुनि ॥
दण्ड कमण्डल कर, कच^६ सेत ।
हरखित^७ मुनि नेछ राजनिकेत^८ ॥
देखितहि नृप मुनि^९ लेल सन्मानि ।
दिश्य आसन बैसाओल आनि ॥
चरणोदक लेल पैर पखारि ।
मन्दिर सकल सिधाओल^{१०} वारि ॥
नारि सहित नृप कैल प्रणाम ।
ध यभाग मोर मुनि^{११} एल धाम^{१२} ॥
नृप दुहिता^{१३} तब लेल मढाय ।
मुनि पद बन्दन देल कराय ॥
मुनि । सरवज^{१४} अगत हितकारि ।
कहिय सत्ता गुन-दोष विचारि ॥

४९ - पुत्रीक अपूर्व रूप देखि । ५० - पञ्चराज = हिमालयरूप ।
५१ - प्रसन्न । ५२ - हिमालयक नगर । ५३ - केश उज्जर । ५४ - राजभवन ।
५५ - नारदमुनिक सम्मान कयल । ५६ - सिञ्चित कयल । ५७ - घर । ५८ -
पुत्रीके ।

१ - मन मन समरि गिरिजा । २ - सहि । ३ - हरखित । ४ - मुनिक जगाव ।

करण कान्हाराम एह पद भान ।
नारद कहिय वचन परमान ॥

(नारद मुनिः६० कथयति मालवरागे)--८

नारद मुनि जान सब नाम ।
से कोन ठाम जहाँ ने पयाम^{६१} ॥
तीनहु लोक हमर संचार ।
केशो नहि देखि मोहि नेवार^{६२} ॥
अतए जाइ मुनिअ जे कान ।
गोए^{६३} ने धरिअ करिअ सखान ॥
से मुनि सबहि मानव रोज ।
गुह स्वभाव हमर कोन दोख ॥
चरचा हमर होअ सब ठाम ।
अचित कहिय होअ ते^{६४} दुरनाम^{६५} ॥
करण कवि कान्हाराम भान ।
सुपथ कहिय कुनद^{६६} कए मान

(गुनः६६ नारदः गीत गावति केशार रागे) --९

अयलहु^{६७} ते^{६८} तुअ धाम राजा, अयलहु^{६९} ते^{७०} सुअ धाम ते ।
सुनल कान गिरिराज^{७१} सुता भेलि, ते^{७२} मन भेल^{७३} अभिराम ।
रखि कुतारध^{७४} भेलहु हेमत^{७५} रिखि, नारद मुनि मोर नाम ॥

२६ - सर्वज्ञ । ६० - नारद मुनि मालवरागमे कहैत छथि ।

६१ - प्रयाण (यात्रा) करैत छथि । ६२ - निधारण कम सकैछ (रोकि सकैछ) ।
६३ - गुप्त कय । ६४ - दुर्गति । ६५ - अश्लाह बात । ६६ - फेर नारद गीत
गवैत छथि । ६७ - हिमालयके पुत्री भेलनि अछि । ६८ - सुन्दर । ६९ - धन्य ।
७० - हिमालय । ७१ - पवित्र ।

१ - दूरनाम ।

सोभा सुभग सकल छवि मोहिनि, जोहल जगत समाम ।
एहनि मुलच्छनि दोसर न देखिअ, गात्र करण कन्हाराम ॥

छन्द--१०

विहसि गुह^{७१} मुहु वचन मुनि कह, सुनिअ नृपति विचार यो ।
गुन-खानि^{७२} परम सयानि^{७३} भगवति, आय लेल अवतार यो ॥
नाम उमा भवति गौरी, सुभग सता तोहर यो ।
सुनि गिरिपति सहित दम्पति, कंछ मत उद्गार यो ॥
दुख चारि दोख विचारि नारद, कंछ पुनि अनुसार यो ।
पितु-मातु-हिन^{७४} वर दीनता अति, घर न कुल परिवार यो ।
नगन^{७५} जटिल^{७६} अकाम^{७७} सब खन, अशुभ भेल अपार यो ।
एहन सर घर होएत गिरिजहि, उविधि से लिखल कपार यो ॥

दोहा

पुनि लखन गिरिराज सुनु, कहीं से हृदय विचारि ।
अचल हिनक अहिवात जग, परम पित्राक विचारि ॥११॥

हेमत-मनाइनि-विलापगीतं गायति-११

नारद वचन भूठ नहि रे जिउ सत्य के जानी ।
दम्पति सहित विकल नृप रे गौरी गुन खानी ॥
सुभग मुकोमलि^{७८} दुलहि रे निहि^{७९} सिरिजल आनी ।
तनिका लिखल वर वाउर^{८०} रे विधि मति भूलानी ॥

७१ - गुह (गम्भीर) । ७२ - गुण सँ भरल । ७३ - चतुरा । ७४ - पिता ओ माता
सँ हीन वर । ७५ - नाइट । ७६ - कामना सँ हीन ।
७७ - पुत्री । ७८ - विधाता आनि कय वनाओल । ७९ - बताह ।

१ - हिन दीनता । २ - जटिल । ३ - विधि लिखल । ४ - हेमत ।

सखि सज्ज उमा भवन रह रे मैना तहाँ जाई ।
देखि दुलहि पुलकित मन रे जल दृग-दोउ^{८१} छाई ॥
कान्हाराम मन मन दय रे सुनि हेमत-विचारो ।
त्रिभुवनपति उमापति रे सब सोक निवारो ॥

गीतिका छन्द - १२

जत कहल नारद नृपति के तत सुनल गौरी कान हे ।
बूठ होए न वचन मुनिकेर विधि^{८२} तनय सब जान हे ॥
शिव धरण प्रीति पुनीत चित धरि मिलन कौन धरान हे ।
एहि सोच सबखन रहहि गिरिजा सज्ज सखी नहि जान हे ॥
धरि^{८३} धीर कहि गिरिराज, सुनि ! सुनु करिअ कोन उपाए हे ।
कहहि नारद सुनिअ हेम^{८४} गिरि लिखल पेटल न जाए हे ॥
जे वरनि वरगुन कहल हम से मिलत गौरिहि आए हे ॥
कहाँ एक उपाए करि ओ होएब दसवर सहाए हे ॥
(पुनः नारदः कथयति । गीतं मालवरागे) १३

जे वर दोउ^{८५} सब कहल बखानि ।
से लखन देखिअ सुलवानि^{८६} ॥
तपोवन तप कर सता तोहारि ।
मिलिहहि वर सुन्दर विपुरारि^{८७} ॥
साहस सिद्धि होए सबठाम ।
करय उमा तप पुर मनकाम ॥
वर-गुन अनित^{८८} देखिअ जग मांह ।
शिव छाड़ि गौरी दोसर नहि नाह ॥

८० - गुन आँखि मे तोर भरल । ८१ - दूर कपल ।

८२ - अन्ताक पुत्र नारद । ८३ - धैर्य धारण कय । ८४ - हिमालय । ८५ - फेर
नारद कहैत छवि । ८६ - वरक दोष । ८७ - महादेव मे ।

१ - हेमकर ।

कृपा-सिन्धु वर दानी महेश ।
भवन चलल मुनि कहि उपदेश ॥
करण काण्हराम एह पद भान ।
नारद वचन करिअ परमान^{१०} ॥

दोहा

गिरिजहि आसिख दीन्ह मुनि, गुमरि । शङ्करक नाम ।
2सोवओ^{११} संसय तेजि नृप, कहि गमने निज धाम ॥ १५ ॥

(गीत १२मनाइनि गायति) १४

^{१२}कहत एकांत बनाए, मनाइनि पुछल ।
कहिअ नाथ ! मुनि बात, हम नहि बूझल ॥
वर वर कुल परिवाह, निक जसो पाविअ ।
गौरी आग वर होए, विवाह करविअ ॥
गौरी कुमारि रहति, से बर सह्य ।
बूढ भिखारि कुभेख^{१३}, से नहि करब ॥
प्राण-पिआरि दुआरि उभा पहु जाविअ ।
तेहन करिअ वर जोहि देखि सुख मानिअ ॥
ई कहि हेमस^{१४}-पिआरि, पिआपद^{१५} गहल ।
सहित सिनेह^{१६} गौरीस, वचन सब कहल ।
शोच बिसारि पिआरि, राम सुभर मन ।
से करिहय कल्याण, काण्हराम भन ।

(गीत १२राजा कथयति केदाररागे) १५

जओ तोहि बेटीक नेह । रानी हे, कहिअ सिखावहु सेह ॥
तप जसो करय भवनि । रानी हे, तखन मिलत सुलपनि ॥

५४ - महादेव । ५६ - अपरिमित (अत्यधिक) । ६० - विश्वास ।

६१ - संशय = सन्देह । ६२ - गीत मनाइनि गवैत छथि । ६३ - पतिके । ६४ -
अधलाह वेध मे ।

1—शंकर नाम । 2—सोवओ ।

ताव न मेहत कलैस । रानी हे, विनु परयस महेश ॥
नारद कहल विचारि । रानी हे, वर गुन^{१७} निधि त्रिपुरादि ॥
मुनि प्रति वचन सोहाए । रानी हे, तुरित^{१००} गौरी पड़ जाए ॥
देखि भरल दुग^{१०१} पाति, रानी हे, शोक बंसाओल आनि ॥
छन छन लेअ उर लाए । रानी हे, प्रेम सौ कहल न जाए ॥
करण काण्हराम भान । रानी हे, जग जननी सब जान ॥

छन्द १६

सब जानि परम सेवनि^{१०२} गिरिजा, शोक कोमल बैन^{१०३} यो ।
हम राति सपना देखय जननी, कहिअ से गुनु ऐन यो ॥
विप्रवर घर आय हमरे, कहल तप कछ जाए यो ।
देवरिखि प्रत कहल प्रथमहि, सत्य वचन दूढ़ाए^{१०४} यो ॥
पिता मातुहि भाव मन सप, करी शोख नसाए यो ।
एहन सपन^{१०५} निशि^{१०६} देखल, माता, करण काण्हराम भाव यो ॥

पुनः पावैती गीत गायति-१७

तपसल^{१०७} सृष्टि रचल विधि रे, विष्णु जगदानी ।
तप बल सम्भू^{१०८} संधार ह^{१०९} रे, महिधर^{११०} अहि पानी ॥
तप आधार निब हय जग रे, तप करहु भवानी ।
ई कहि विप्र समन कर रे, सुनल मन जानी ॥

६१ हिमाक्षयक प्रिया । ६२—पतिक पद । ६३—वर्तमान । ६४—गीत
राजा कहै छथि । ६५—वरत पुनक लज ना बिसाह महादेव । ६६—
शोच । ६७—गौरीक लप । ६८—आखि मे नौर । ६९—चतुरा । ७०—वचन ।

७१—निचित भय । ७२—नाश कप । ७३—राति मे । ७४—तपस्याक बल सौ ।

७५—सन्तारक संहार करै छथि । ७६—पृथ्वीके धारण करै छथि सर्व ।
(सेपनाग) ।

१—निधि हम देखल । २—सेख । ३—ह ।

सुनिहहि सोक थिहल भेलि रे, भय नागरि१२ रानी ।
नृति बोलए कहल सब रे, सपना से बखानी ॥
मातु पिता समुझाओल रे, बहु विधि अनुमानी ।
करय चलल तप दुल्लहि रे कान्हाराम बखानी ॥

छन्द १०

पितु मातु प्रिय परिवार परिजन तगर जत नर नारि यो ।
थिकल सोकाकुल सखीहि दृग१३, बरिस जलधर धारि यो ॥
देवमुनि पुनि आय सबहि, सुसाध कहल सवाद यो ।
पारवती तदा संकर भेटिअ भेटिअ६ सबहु बिषाद१४ यो ॥

(तपोवन१५ पार्वती गच्छति । तस्य गीतं गायति मालवराने-१६)

हेनथिरिकूमरि सुमरि महेश१६ । तपोवन चलल तपस्विनि भेत्त ॥
मणिमय भूषण देल नडाए । अङ्ग विभूति लेल लगाए ॥
घाट १७पटम्बर पहिरन छोड़ि । पहिरि वषट्कर भेलि तँआरि ॥
सुललित जपन जोग जपमाल । कर१८ उर पहिरि लेल ततकाल
प्रिय परिजन पितु मातु विसारि । करय चलल तप राजकुमारि ॥
गई तहाँ जहाँ विरिन१९ निकुञ्ज । देसि करए लागलि २० तपपुञ्ज ॥
फिरि आईलि सङ सखी-सहेलि । करय कटिन व्रत कमा अकेलि ॥
कबहु कबहु फल७ मूल गरास२१ । कबहु८ करय व्रत करि उपवास ॥

१३-बुधियारि ॥

१३-आँखि मेघ जकाँ जल बरसय लागल । १४-दुःख । १५-पार्वती तपोवन जाइत छथि । तकर गीत गवैत छथि नर्स फलोकनि मालवरान मे । १६-महादेवक स्मरण कय । १७-पटोर रेशमी वस्त्र पहिरन छोड़ि । १८-हाथ ओ छानी मे । १९-वनक लतागृह मे । २०-डेर तपस्या । २१-भोजन करयि ।

४-सनुमानि ।

५-सब दृग । ६-० । ७-० । ८-बहुत ।

तन सुख विसरि तपहि मन लाग । नित९ नूतन शिव-पद अनुराग ॥
करण कान्हाराम भन मन लाग । दरसन देव शिवसङ्कर आए ॥

दोहा

गई तपोवन गौरि जव, बँटी ध्यान लगाय ।

करन लगी तप जोगव्रत, हरपद प्रीति दूहाय२२ ॥१७॥

पुनः गीतं गायति मालवराने-२०

भमि२३ भमि विपिन२४ तोड़ल दलफूल । अनेक कुसुम२५ दल, छोड़ि ओड़ल ॥
बेलि चमेली कुन्द नैवार२६ । तोड़ल श्रीदल२७ ताकि अंगार२८ ॥
धूप दीप नैवेद कर तूल । पुजिअ सदाशिव होथि अनुकूल ॥
करिअ कठिन । व्रत गौरि त्रिकाल । बरिअ आय हर दीन-दयाल ॥
साधन विपुल२९ कएल भवानि । अमित३० वरष नहि जाए बखानि ॥
आय सपन शिव दरसन बैल । तप-सिद्धि गौरि तोहर अब भेल ॥
मन धर धीर बचन सुनु आव । दरसन देव देखि तुअ भाव ॥
कान्हाराम भन सुनि उपदेश । शिव महेश, जे हरत कलेश ॥

दोहा

३१अन्तरजामी समुझि चित, बूझे गौरि३ कलेश ॥

बले तपोवन मुदित मन, आरत३२ हरत महेश ॥१७॥

२२-स्वयं कय । २३-धूमि धूमि । २४-वन मे । २५-फूल ओ पात ।
२६-कुन्दक समानाकार फूल नैवारि । २७-बेलपात । २८-...
२९-पर्याप्त । ३०-असंख्य । ३१-अन्तर्यामी=मनक वास बुझयबला ।
३२-दुःख दूर कयनिहार ।

१०-गीत ।

१-कठिन । २-बखान । ३-गौरी ।

श्री महादेवक तपोधन प्रवेश गीतं मालवरीरामे—२१

दीन बन्धु कुपाल भद्र । देल परदेश उभा जेहि देस ॥
 सोमिन तिलक माल^१ तसि रेख । मगन^२ जटील अमंगल भेस ॥
 हारमाल जवमाल कपाल । भूत-प्रेतमन संग बैताल ॥
 डिमि डिमि डमरु पाज सब काल । पट बिहून^३ कटि^४ केहरि छाल ॥
 असुभ भेस सब लेल जनाप । बलम बहन चहु तपोधन जाय ॥
 जटा-जूट-सुरसरि^५ नीर । देखल उभा हरल सब पीर ॥
 पारवती सिव दरसन देल । कहल मोहर अब मग मिथि भेल ॥
 कन्हाराम कह धर बिसवास । घर पए सिव चललाह कैलास ॥

पुनः गीतिका छन्द—२२

आय वर हम होएव मोहर छोड़इ जव तप ध्यान हे ।
 जाह पितु गृह सुगित^६ गिरिजा देल तरि वरदान हे ॥
 सिवक बानी मुनि भवानी परम हृदय हुलास हे ।
 कन्हाराम भन वर दय संतर गमन कैल कैलास हे ॥

छन्दोऽर्थ १९ गीतं आसावरीरामे—२३

वर देल तोहि हम जाजे । सफल करव मुख काजे ॥
 तेजह कठिन^१ तप आये । फोल हरल देखि भाये ॥
 जाह सुरित पितु^२ मेहे । अवल तोहर सिनेहे ॥
 उमा सुनि आनन्दे । जनि मितु कुमुदिनि चन्दे ॥
 मानस बड़ल हुलासे । पुरल सकल मन आसे ॥
 कन्हाराम पद-भासे । सिव कैल गमन कैलासे ॥

११—कपाल पर चन्द्रमाक रेखा (अर्धचन्द्र) । १४—नग्न—नाडट ।

१५—वस्त्रविहीन । १६—डांड मे बाधक छाल । १७—गंगाक जल ।

१८—जीव । १९—छन्दक अर्थसे गीत । २०—पिताक घर ।

१ - छन्दार्थ । २ - कठिन । ३ - ब्रुसल । ४ - अनन्दे ।

पार्वती गीतं गायति आसावरीरामे—२४

आज - सुफल तप भेला । हरि हरि^१, सिव दरसन मोहि देला ॥
 पुख^२ प्रीति रिति जानी । परसन भेल सुलपानी^३ ॥
 मेदल दुसह भलेमे । वर देल आय महेते ॥
 कन्हाराम पद भाने । मुनिक वचन परमाने ॥

(पार्वती देह साधना कय तपस्या करीष । तस्य गीतं मालवरीरामे-२५)

वरज हजार कन्द मुल भोजन, साक^४ वरख सत खाए ॥
 किछ^५ दिन ^६वारि तीबि^७ तप कैलन्हि, ए विधि दिवस गमाए ।
 किछु दिन भोजन सब परिहरलन्हि^८, तप कर पीबि बतासे^९ ॥
 एहन कठिन^{१०} तप देखि उमाके, बानी भेल अकासे^{११} ॥
 तप सिद्धि तोहर मनोरथ सफलित, भेल^{१२} कुसार्थ भवानी ।
 कन्हाराम भन मुनिज उमा मन, ^{१३}आव मिलव सुलपानी ॥

दोहा

गमन^{१४}-बानि अनुमानि जिअ, सत्य करिअ बिसवास ।
 पिता बोलावन आव जब, तप तेजि जाह अवास^{१५} ॥१६॥
 मिनिहोहि आय सपरिकि, तब जानव परतीत^{१६} ।
 सुनत गमन^{१७} विधि-वचन जब, पुलकित उमा सुप्रीति ॥१८॥

४१—अहो ! ४२—महादेव । ४३—सात सय वर्ष क । ४४—जल ।

४५—छोड़ि देलनि । ४६—हवा । ४७—आकाश-वाणी भेल ।

४८ - आकाशक वाणी । ४९ - घर । ५० - विश्वास । ५१ - आकाश
 मे ब्रह्माक वचन ।

५ - पुष्प । ६ - किछु । ७ - पीबि । ८ - कठिन उमा तप देखि विधाता,
 भेल अकाशक वाणी । ९ - मुनित । १० - अब ।

(सतीक। मरणोपरान्त श्री महादेव समाधि लगाय रहसि ।

तस्य गीतं गायति आसावरी रागे) — २६

सतीक जलन परिनामे^१ । सित मने मेल विरामे^२ ॥
जपन लागु हरिनामे^३ । सुनहि राम^४ गुण-प्राप्ते ॥
रहहि सीव^५ सुखवाप्ते । तेजि मोह मद कामे ॥
सुनहि शान^६ मुनि ठामे । सब विधि रहहि अरामे ॥
राम नाम गुन गाने । सदा^७ मगन मन ध्याने ॥
करण कन्हाराम भाने । भक्ति-विवत भगवाने ॥

दोहा

बहुत दिवस जब बितित^८ भय, एहि प्रकार बहु का^९ ।
सङ्कुर प्रेम प्रधीत बुकि, प्रसदे राम दयाल ॥२१॥

(श्री रामचन्द्रक^१ श्रीसिव^२ पहुँ आगमन । तस्य गीतं

आसावरीरागे) — २७

सुनु सित ओ रे, ६१ कह हरि । सुअ सम के जग तप करि ॥
बहु विधि ओ रे, सराहल । सित निज प्रेम निवाहल ६२ ॥
पुनि हरि ओ रे, ७५ साओल । गौरीक जन्म सुनाओल ॥
गुन सब ओ रे, गौरी कर । कहल राम सुनल हर ॥
बिनती ओ रे, सुनिअ हर । जाए होइअ गौरीवर ॥
एह वर ओ रे, मागिअ । कन्हाराम कह मानिअ ॥

दोहा

रामचन्द्र वर दद सित, तब आवे कैलास ।
^१सप्तरिखी तेहि समय सह ६४, आय मुदित सित-पास ॥२२॥
कहे महेस रिखेस^५ सुनु, तपोवन करहु पयान^६ ।
उमा प्रीति परतीति लखि, लाय कहहु परमान ॥२३॥

(सप्तरिखि तपोवन प्रवेश गीतं मालव रागे) — २८

देल परवेस सप्तरीखेस^१ । जहाँ रह उमा तपस्विनि भेस ॥
दण्ड कमण्डल कर पुनि वेद । चलल बुझए रिखि गौरीक भेद^२ ॥
कह रिखि गौरि^३ । सुनहु मन लाय । केहि कारण बल तप कर आय ॥
काहि मनावहु, की मन तोहि । सरये बचन उमा कहु मोहि ॥
सुनि मुनिबचन उमा तब बाज । केहिनी गूढ़ कहत होअ लाज ॥
नारद आय देल उपदेस । ते^४ तप करि पति होधि महेस ॥
बिहुसि उठे मुनि परम सुजान । नारद बचन सुनय जे कान ॥
ताहि कबहु नहि हो कहयान । करण कन्हाराम एह पद भान ॥

छन्द २६

होहि परम भिखारि सो नर, सुनय नारद बात यो ।
दीन्ह^५ सति^६ उपदेस, पुनि फिरि, भयन खाय ने भात यो ॥
परम कुटिल कठोर कपटी, जगत^७ सजन कहाय यो ।
बचन^८ ताके मानि गिरिजा, उमत^९ वर हित लाय यो ॥

(पुनः ^{११}सप्तर्षिः भवानी प्रति गीतं ७२ कथयति) ३०

कुल परिवार न नेह^{१०}, दिगम्बर ७४ सबलन हे ।

विशधर धर लपटाए, कभेख^{११} निरलज^{१२} तन हे ।

६३—सप्तर्षि । ६४—मध्य । ६५—हे कृपशील (कृषिराज) । ६६—यात्रा ।
६७—सप्तविराज । ६८—गूढ़ अभिप्राय । ६९—सती के । ७०—संसार मे
संजन कहाय । ७१—उत्तम । ७२—फेरसप्तर्षि भवानीक (पार्वतीक)
प्रति गीत कहैत छवि । ७३—घर मे । ७४—नाइट । ७५—अधलाह
वेश ओ निर्लज देह ।

८—गौरी । ९—सति दीन्ह । १०—ताके बचन । ११—सप्तर्षि । १२—निरलज ।

१२ - परिणाम (अन्त) । १३ - वैराग्य । १४ - विष्णुक नाम ।
१५ - रामक गुण समूह । १६ - महादेव अतिशय सुख मे ।
१७ - मुनिक स्वान मे । १८ - तल्लीन । १९ - व्यतीत । २० - पार्श्व (लग) ।
२१—रामचन्द्र कहल । २२—प्रेमक निवाह कयल ।

१ - जीव सतीक मरणान्त । २ - ० । ३ - सम । ४ - श्रीरामचन्द्र श्रीसिव ।
५ - हरी । ६ - करी । ७ - वृत्ता ।

सतत मसानहि वास, पास रह भूतगन हे ।
 निरगुन परम भिक्षारि, न नारि ७९ दरद मन हे ॥
 एहन उमत वर लागि, कठिन व्रत कएलह हे ।
 से वर कए सुख कौन, विपति गमयबह हे ॥
 सती विवाह सिब कएल, जगत सब जानल हे १३ ।
 ताहि देल १०० अखडेरि, फेरि नहि आनल हे ॥
 सुख सोअत १०० नहि, कबहु, भीख रह मंगइत हे ।
 एकसरि रहबहु मोन काज सब करइत हे ॥
 मुनिक वचन सुनि उमा, रहल बिहुसि मन हे ।
 सिब पद प्रेम चित लाब, करण कन्हाराम मन हे ॥

पुन गीत गायति—३१

हमर कहल उमा मानहु हे, वर देव मैं आनी ।
 सीन लोक छवि मोहित हे, वर गुन निधि जानी ॥
 सुन्दर सुभग सुललन हे, जेहि वेद १०० जस गाबे ।
 पुर धेकुण्ड निसीत १०० हे, सुरमुनि सिर नाबे ॥
 दोख रहैत गुनसागर हे, से बड़ तप पाबे ।
 से वर आनि मिलायब हे, देखि मन भाबे ॥
 कन्हाराम भन मन दय हे, सुनल मुनिवाणी ।
 नीक देल उपदेश मोहि हे, हँसि बोललि भवानी ॥

पार्वती कथयति गीत आसावरीरामे—३१

बोली बिहुसि भवानी । मुनि हे, सुनिअ तोहि बड़ ज्ञानी ॥
 हेम ११ उपल भए जाए । मुनि हे, १४ हठहि न प्रीति १२ दुराए ॥

७९ - नारीक प्रति मत में दर्द नहि छनि । ७७ - उपेक्षा कयल । ७८ - सुतेत छवि । ७९ - जनिक यश वेद गवीत अलि । ८० - निषिक्त (स्थित) ।
 ८१ - सोना वह नाथर भय जाय ।

१३ - (सप्त चरण में 'हे' नहि अछि) । १४ - हठ न ।

नारद वचन न रयामे । मुनि हे, सिब पद चित अनुरागे ॥
 अथगुन भरल १०० महेसे । मुनि हे, तनि पद प्रीति हमेसे १४ ॥
 विष्णु गुन निधि घामे । मुनि हे, तनिक न मोहि किछ कामे ॥
 कन्हाराम कवि गाबे । मुनि हे, सिब छाड़ि दोसर न भाबे ॥

गीतिका छन्द—३३

प्रथम मुनिवर आय हम १०० पह, दितहुं जे उपदेश हे ।
 रोइ सुनि मन जानि करितहुं, तेहन सपवत बेस हे ॥
 सम्भू रौं हम जन्म हारल, अब न दोसर विचार हे ।
 हठ तेजहु सठता १०० वचन, ता सब कहिय बारम्बार हे ॥
 घटक काज बड़ चटक चाहिय आलस काज नसाए हे ।
 जगत पहुँ १०० कत जे वर कथा, करिअ जाय मिलाय हे ।
 कन्हाराम भन मन कयल विड़ व्रत, उमा नारद १०० बाक हे ।
 रहब घर कुमारि बर हर १००, बिनु ने आनहि ताक हे ॥

दोहा

पगुपरि १०० मुनि कर जोरि कह, सुनिअ मातु जगदम्ब ।
 पिता भवन अब गमन कर, होइल बड़े बिलम्ब ॥२४॥
 सिब पद प्रीति पुनीत लखि, गौरी मनहि रिखिस ११ ।
 गये हेमाचल पास तब, कहे उमाक कलेस ॥२५॥
 सुनि मुनीस के वचन मृग, गये तपोवन धाय ।
 करि विनती गृह आनेऊ, तुरित १२ उमाके बोलाय ॥२६॥

८१ - प्रेम किन्तु नहि दूर होइल । ८२ - महेश । ८३ - हमेशा (सतत) ।
 ८४ - हमरा लग । ८५ - कपट । ८६ - मध्य । ८७ - वचन । ८८ - महादेवक
 विना । ८९ - वरन । ९० - महादेवक विना । ९१ - पाएर पड़ि ।
 ९२ - मुनिराज । ९३ - तुल्य ।

(पार्श्वती^{१३} भवनं गच्छति । तस्य गीतं गायति) १४

करि विमती गिरिराज, उमा लय आयल हे ।
हरखित भेलि मनाइनि, नयन जुड़ायल हे ॥
सखि सब मिलि पुनि गौरी, अंकम^{१४} लाओल हे ।
हरख नयन डर नीर^१, देखि सुख पाओल हे ॥
सुनल नगर नर नारि, सबहि उठि छाओल हे ।
पुलकित परम आनन्द, उमा उर^{१५} लाओल हे ॥
प्रेम-मगन दिन-राति, सखी^२ सब रमयित^{१६} हे ।
करहि कुसुहल^{१७} खेलि, विविध विध गमयित^{१८} हे ॥
नृपति सुखाय मनाइनि, अति प्रिय भाषि हे ।
गौरिक करिअ विवाह, देखिय भरि आँखि हे ॥
कन्हाराम भन सुनि^३, नृपति सब भाष्य हे ।
धर धरज मन लाय, करस अभिलाष्य हे ॥

दोहा

सस्तरिखि सिब ^{११}पहु गये उमा प्रीति कहू जाए ।
सुनि सिनेह सिब गमन कर, सुनि निज भवन सिधाए ॥२७॥
(हेमत-रिखि^१ -नगरे श्री महादेव-प्रवेशः ।
तस्य गीतं गायति मालवरागे) - १५

आएल सङ्कर विकट धर भेस । देल गिरिराज-नगर परवेश ॥
भाल जलक तिलकर राकेस^१, रूप भवङ्कर उर^२ पर सेस ॥

१३—पार्श्वती घर जाइत छथि । तकर गीत गवैत अछि । १४—गोद मे ।
१५—छाती । १६—आनन्दमय खेल करैत । १७—अङ्कुर । १८—वितवैत ।
१९—सिबक लग । १—हिमालय-राजषिक नगर मे श्रीमहादेवक प्रवेश
होइछ । तकर गीत गवैत अछि । २—तिलकक रूप मे चन्द्रमा ।
३—छाती पर शेषनाग ।

१—लोच । २—सखी । ३—सुनि । ४—गमन भी ।

ठाढ़ भेल हर, द्वार गिरीस । डमरु बजाब बाज नहि ईस^१ ॥
बाघम्वर पट लेल अछाए । बैसल मगन मन धुनी^२ लगाए ॥
खरि भेल नय - मन्दिल^३ रानि । भिखि लय बहार भेलि कुमरि-भवानी ॥
जाए देखल मुख जोगी अकलेश । उमा चिन्हल, चिन्हल महेश ॥
भिखि न लेअ जोगी रहल निहारि । प्रेम भरल मन राजकुमारि ॥
कन्हाराम हर बूझि सिनेह । चट उठि गमन कयल निज गेह^४ ॥

उमा - विन्हगीत अ.सावरीरागे—२६

भल हर दरसन देला । किअये विमुल भय मेला ॥
उमा सोचवस^५ भेली । सुखल न संग सहेली ॥
मानस परम अन्देसे । कोन परि मिलब सहेसे ॥
विरह विकल भवानी । लखत सखी सयानी ॥
घरज धर सुकुमारी^६ । वर आय विपुरारी ॥
सुनि सखि मृदुवानी । मन पुलकित भवानी ॥
पुरब प्रीति मन^७ आनी । चललि सुमरि सुलपानी ॥
करण कन्हाराम भाने । सिब^{१०} पद धरि मम ध्याने ॥

दोहा

पुरब सकल मनकामना सिबसङ्कर वर आय ।
मित्र^८ सधाना^९ कहल पुनि, भवन गमन हरखाय ॥२८॥

(श्री महादेव ध्यान लगाय रहथि । तस्य दोहा^{१२})—

हेमत-नगरसँ गमन करि, सिब कैलासहि आय ।
अचल समाधि साधि रह, बैठे ध्यान लगाय ॥२९॥

१—महादेव बाजन मे डमरु बजवैत जथि । २—घर । ३—महादेवक
स्मरण कय ।

५—धुनी । ६—मन्दिल । ७—सोचस । ८—सकुमारी । ९—प्रीति आनी ।
१०—सिबि । ११—सयाना अस । १२—दोहा गीतं गायति ।

गीत केदाररागे-३७

बैसल निव सममान ना । करय लागल तप ध्यान ना ॥
सुमरित मन भगवान ना । आन कथा नहि जान ना ॥
बहुन काल विति भेल ना । असुर न प्रकट एक भेल ना ॥

दीहा

ताड़क असुर लेहि समय भय, तेजमन्त बलवान ।
विजय करत सब ठाम फिर, काहुँ कछु न गुदान ॥

ताड़क असुर प्रवेश गीत मालव रागे-३८

ताड़क असुर खेल अवतार । भज बल जीतल सकल संसार ॥
तीन लोक लोक बड़ देल । मरमपति छीनि हरि लेल ॥
मन्यन असुर अजर तम देह । हारे सुर भागे छोड़ि गेह ॥
विधि ११५६ गये, अमर १२ अमरेय । जाय कहल सब विपति कलेस ॥
ताड़क देख भेल परचण्ड । ताकु प्रताप काय सब - खण्ड १३ ॥
करण कन्हाराम भन मन लाय । धरु धीरज विधि करय उपाय ॥

सुर सुरपति सौ विधि कह्य, सुनहु एक परकार ।

सम्भु - तनय पदवदन १४ तै, होय असुर - संहार ॥३१॥

विधि उक्ति । गीत देशाखरागे-३९

कह विरचि १५ सुनिअ सुरसे १६ । ईश्वर करय सँ हरत कलेस ॥
गिनु गृह जाय सती तैनु देहे । हिमनिशि भवन जन्म लेल सेहे ॥
तपोवन तप कयल राजकुमारी । हर वर लागि सहै दुख भारी ॥

७-चमुरा । ८-देव ।

९-देवताक सम्पत्ति छीनि केँ हरण कय लेलक । १०-नष्ट नहि भेनिहार ।

११-विधाताक लग । १२-देवता ओ देवराज । १३-पृथ्वीक नवी द्वीप ।

१४-कातिकेय । १५-ब्रह्मा । १६-इन्द्र ।

१-काहु । २-सम्पत्ति छिति ।

हर समाधि बैठे समसामे । ताहि बुझाओय कोन घराने ॥
मदन पास जाइअ सुरराजे । हर मन छोड़ि १७ करय होय काजे ॥
करण कन्हाराम भन परमाने । एह उपाए छोड़ि दोसर न आने ॥

दीहा

सुर सुरपति विधि बचन सुनि, गये मदन १८ यह धाय ।
विविध नाति अस्तुति करि, विपति कह्ये निमज्जाय ॥३१॥

छन्द - ४०

कहुहि सुरपति सुनिअ रतिपति १९, करिअ मोर उपकार दो ।
ताड़कासुर देत सुर पुत्र, करय बड़ परहार २० यो ॥
सम्भ - सुर २१ तहु मरत अरिजत २२, तकर करिअ निभाइ यो ।
जाय हर मन क्षोभ २३ करिअ सब, करय सङ्कर ध्याइ यो ॥

सोराठा

सुर स्तुति किन्हे जायः भेटे मनसि २४ आए सब ।
विपति सुरन गुनाय, मदन २५ कहे मोहि कुसल सहि ॥३३॥

मदन २६ कथयति गीत केदार रागे - ४१

करय काज तोहार, सुरपति । परम घरम उपकार ॥
परहि २७ जाय जसो प्राण, सुरपति । सदगति देहि भगवान ॥
धीरज धरिअ सुरेश २८, सुरपति । छोमित करय महेश ॥
करण कन्हाराम भान, सुरपति । लेल मदन धनु बाण ॥

(मदन धनु - सर लय श्री महादेवक ध्यान तोड़य? मच्छति,

तमय ३छन्द) - ४२

जब पले श्री रतिनाथ २९ । लय समन - सर २९ धनु हाथ ॥

१७-क्षोभ (वेचनी) । १८-कामदेवक लग दीड़के । १९-कामदेव ।

२०-प्रहार । २१-शिवक पुत्र सौ । २२-शत्रु । २३-विकलता ।

२४-कामदेव । २५-कामदेव । २६-कामदेव कहैत छति ।

२७-दीवरक काजनाक हेतु । २८-कामदेव । २९-कुलक बाण ओ धनुष ।

१-सुरसे, छोमित । २-करय । ३-तोपर क्षय ।

करि हृदय माह विचार । तब किन्ह बत संसार ॥
 मनसिज भयो^४ कोपमान । तब रहा कछु न ठेकान ॥
 ब्रह्मचारि श्रनकार । ताहु उर से^५ मार ॥
 करन जप तप जोग । सेउ भूलि भेल रस भोग ॥
 काहु न धीरज धरम । भयो ज्ञान तेज बेमरम^७ ॥
 नहि रहा काहु विवेक । सब छोड़े धर्मक टेक ॥
 वरनि^{१०} धीर तर नारि । भयो काम वस विचालि^८ ॥
 ३१सैल सैलहि धाय । भयो अवल^९ रस भाव ॥
 उमरि सुरसरि^{१०} नीर । तब मिले सागर तीर ॥
^{१०}उर^{१०} सबहि मदन बिराज । सब छोड़े धीरज लाज ॥
 नदी नाल ताल ब । करत संग सघाव ॥
 तब लता सखा निहारि । ओड लेन बहु^{११} अकवारि ।
 जहाँ जड़नि^{१२} की गति ऐस । तहाँ चैतन्य^{१३} जन^{१२} कंस ॥
 पशु पक्षी जीव^{१३} जन्तु । लागू कामक तन्तु ॥
 सुर असुर किन्दर^{१४} ब्याल । अओ भूत प्रेत बैताल ॥
 इन्ह दसा ब्या कल^{१५} बयान । ह्व^{१६} सदा मदन गुलाम ॥
 भओ लोक मदनक अन्ध । सब छोड़े घर के धन्ध ॥
 कहत कवि कान्हाराम । सब बेमत भयो यश काम ॥

१४छन्दोऽर्थे गीत आसावरो रागे-४३

सबक विवेक दुरि गेले । काम-विषस सब भेले ॥
 जोभी जतो तप ध्याने । छाड़ि भूलल रसधाने ॥

३० - पृथ्वी पर घेर्यवान् । ३१ - पर्वत पर्वत दिस दीक्षित अछि । ३२ - गंगाक जल । ३३ - समक हृदय मे ३४ - आलिङ्गन । ३५ - अचेतन वस्तु । ३६ - चल-निहार जीव । ३७ - किन्दर (देवविशेष) ओ साप । ३८ - स छडीकरण । ३९ - अछि (है) ।

४ - भयो कोउ बोव । ५ - सेर । ६ - नी । ७ - बेमर्म । ८ - विरवाधि । ९ - अवल मन रस । १० - उर । ११ - ० । १२ - जन्म । १३ - जीव जनि सब जगु । १४ - छन्दोऽर्थे ।

तेजल सब सव^{४०} । बिसरल सुकृत^{४१} पन्थे ॥
 वेद विधान बिसारि । प्रेम मगन नर नारि ॥
 धनु सर जख लेल मारे^{४२} । धीरज जग सौ बिसारे ॥
 मदन कयल विपरीति । काहु रहल नहि^{४३} सीति^{४३} ॥
 निज निज तेज^{४४} मरजादे । सवय काम-रस रवादे ॥
 करन कान्हाराम गावे । पुनि जनि हो अस भावे ॥

सोरठा

परम बिकल बसि काम, सुर गन्धर्व सिद्ध नर ।
 बिसरि रहे हरिनाम, मनसिज^{४५} मन सब के हरे ॥३४॥

दोहा

बुद्ध^{४६} वण्ड^{४६} ब्रह्म^{४७} मह, लीला अस कर मार^{४७} ।
 नारि नारि अस पुरुष कर, नारी^{४७} पुरुष हकार ॥३५॥

छन्द-४४

बुई परम प्रवण्ड मनसिज, कीन्ह कीतुक^{४८} डोल यो ।
 जायत हर^{४८} पह जाय मनसिज, तावत उठल कलोल यो ॥
 तिवहि देखि सकम्प ॥ मनसिज, डरम अति बित डोल यो ।
 पूर्ववत संसार बिति गति, भेल परम अमोल यो ॥

सोरठा

बुद्धि भये सब जीव, मदन^{४९} १७तरासित बाल जिमि ।
 डरे काम देखि सीव^{२०}, मनसिज मनहि विचार करि ॥३६॥

४० - उत्तम पुस्तक । ४१ - धर्मक वाट । ४२ - कामदेव । ४३ - धर्म । ४४ - मर्यादा छोड़ल । ४५ - कामदेव समक मनके हरलनि । ४६ - ब्रह्माण्ड भरि मे दू टा छोटी बलओठनि । ४७ - कामदेव एहि प्रकारक लीला कयल । ४८ - विस्मय प्रस्तुत कयल । ४९ - शिवक लग । २० - कामदेव सौ तेना डरावक जेना वण्डा कसरो सौ डरावत अछि ।

१५ - चीत्ती । १६ - बुद्ध । १७ - पुरुष नारी । १८ - मन मनसिज । १९ - सरसल । २० - तिव ।

फिरत होत अति लाज, करछी कोन परकार, विधि ।
प्रकट कीन्ह रिसुराज^{१९}, कुसुमित भयो वन-मुमन पर ॥३७॥

वसन्तरागे - ४५

रितु समय प्रकट वसन्त सुन्दर, देखि वन मन मोहही ।
धापी^{२०} तड़ाग सरोज विभसित, सुखद सर^{२१} सब सोहही ॥
तहाँ गुञ्ज मञ्जुल मत्त मधुकर, हुंस सूक^{२२} पिक धुनि करी ।
कत नाथ नाथहि अस्सरायन, मगन मन आनन्द भरी ॥
बहु पवन^{२३} मन्द सुगन्ध सीतल, मदन ज्वाला बहि चली ।
सबए^{२४} मन मनसिज^{२५} जागे, सुभमता तन अति भली ॥
करि कोटि कला उपाय मनसिज, हारे सौन^{२६} २२ सहाजियाँ ।
अचल सम्भु समाधि छूट^{२३} न, करण कन्हाराम गाजिजाँ^{२४} ॥

दोहा

चितवन^{२५} चहु दिस निरखि कय, देखे विटप^{२६} विशाल ।
कोवि^{२७} चहु तेहि दरख पर, किये नयन दुहु लाल ॥३८॥

छन्द - ४६

कए कत परहार मनसिज छूट न सम्भु समाधि यो ।
दरख पर चढ़ि कए जे मारए, सिवहि^{२८} २३ सर साधि यो ।
उठे जागि समाधि छूटे, जूटे मदन याधि^{२९} यो ।
चहु ओर नयन उबारि देखे दरख पर अपराधि यो ॥

१९ - वसन्त । २० - बाजली ओ पोखरि मे कमल फुलायल । २१ - पोखरि ।
२२ - सुग्गा । २३ - हुवा । २४ - कामदेव । २५ - सौम्य ओ सहायक ।
२६ - विशाल गाल पर । २७ - कोष कय । २८ - शिवक छाती पर सर साधि
के । २९ - ज्वाला ।

21 - मुए । 22 - सहाजियाँ । 23 - छूटल । 24 - गाजिजाँ । 25 - चितवन ।

दोहा

तेतर नयन उधारेउ, कोपे अनल^{३०} घहाय ।
चितवन^{३१} नयन तकाय कय^{३२}, काम भये जरि छाव ॥३९॥
हाहाकार जगत भए^{३३}, भोगी सब पछताव ।
हरखि^{३४} जोगि जति तप रम, भये अकण्ठक आव ॥४०॥
रती सुने^{३५} पति-मरन सुधि, अमाकुलि पहुँचलि^{३६} धाय ।
रोधति^{३७} ३३ वदति करुणा करति, हरपद छोटति आय ॥४१॥

रति-विलाप केदाररागे - ४७

किअ पहु हरल हमार हे हर, किअ पहु हरल हमार ।
कोन अपराध पहु^{३८}, कयल तोहर दहु, जारि कयलहु पहु छार ॥
तोहे विभयन पति, जाभि नारि मति, धिनु पहु जीवन असार ।
घोर नयन धनि, हरल सिन्दुर मनि, पहु विनु जगत अघार ॥
छन छन महिपर^{३९}, नयन नीर डर, करुणा करय अघार ।
रति विकल तह, सङ्कर सुनि कह, होयत तोहर परकार ॥
अंजन धय रहु मिलत तोहि पहु, यदुकुल कृष्ण अवतार ।
तासु नयन रति, होयत तोहर पति, छुटत विरह दुख भार ॥
नाम अनङ्ग अङ्ग नहि तय लगि, विनु तन^{४०} जीवन संसार ।
कन्हाराम भन, रति मगन मन, चलि गेल अपन अघार^{४१} ॥

(सुरपति श्री महादेव^{४२} पहु गच्छति । गौड़ सालवरागे - ४८)

हरक समाधि तोड़ल जेव मनसिज, सुरपति^{४३} सुनल काने ।
सहित विरञ्चि^{४४} ३३ देव सुरपति मिलि, हरि पहु कयल पयान^{४५} ॥

४२ - आगि प्रज्वलित अल । ४३ - कर्तव्य वर्जित ।
४४ - पृथ्वी पर । ४५ - बिना देहक जीवन । ४६ - घर ।
४७ - श्रीमहादेवक लग । ४८ - डम्ह । ४९ - ब्रह्मा । ५० - प्रस्थान ।

१ - चितवन । २ - कय सो काम । ३ - श्री । ४ - जोगी जती हरखि । ५ - सुने ।
६ - पहुँचि । ७ - पहु हम कयल । ८ - नहि नयन ।

विष्णु विरञ्चि अमर^{७१} अमराधिप^{७२}, सब गेल सिवक समाजे ।

^{७३}अन्तर्यामि स्वामि सब जानिअ, की कहव हम सब भाखी ।

तदनि विनति करि कहिअ कुबानिधि, ज्यो मोर अभिमत राखी ॥

सुर गन्धर्व सर्व मन इच्छा, देखिस हरक उछाहे^{७४} ।

कान्हाराम भन पुरिअ मनोरथ, करिअ सदासिब आहे ॥

छन्दः । देवोक्ति गायति-४६

दीनबन्धु कुपाल सञ्जूर, अरज^{७५} सुनु मन लाय यो ।

देवकां दुख देत दानव, तकर करिअ उपाय यो ॥

ताड़कासुर प्रबल बल भेल, दप चढ़ रण धाय यो ।

समर कए सब अमर आरे^{७६}, उरे सकल पड़ाय यो ॥

सती जाय जे जन्म लीन्हो, हेमसमुता^{७७} कहाय यो ।

कठिन तपश्रत किन्ह तपोवन, सम्भु-पति हित लाय यो ॥

तासु पाणिग्रहण कीजै, होइअ देव-सहाय यो ।

तासु सत अवतार छटमुख^{७८}, हुनव दानव जाय यो ॥

दीन के दुख हरण सञ्जूर, सरन सब खेल आय यो ।

सरन के प्रभु राखु लज्जा, करण कान्हाराम गाय यो ॥

दोहा

पार्वती तप कीन्ह बड़, सुअ पव प्रीति विचारि ।

अङ्गीकार करि तासु बत, दीनबन्धु त्रिपुरारि ॥४२॥

कहे महादेव सुनिअ प्रभु, सहित विरञ्चि^{७९} सुरेस ।

आजा सब के करव हम, घटक पठाबिअ वस ॥४३॥

७१ - देवता ओ देवराज । ७२ - अन्तर्यामी (मनक बात बुझयवला) । ७३ -

जसाह । ७४ - निवेदन । ७५ - देवता के खेलओलक । ७६ - हिमालयक पुत्री ।

७७ - वषट्मुख (कार्तिक) । ७८ - ब्रह्मा ओ इन्द्र ।

७९ - रावति ।

हरखे सुर वरखे सुमन^{८०}, भगन दुन्दुभी बाज ।

सप्तरीख तेहि समय मह^{८१}, आयै सिवक समाज ॥४४॥

सप्तरिखि-प्रवेश गीतं मालवरागे - ५०

सप्तरिखि अछ अवसर जानि । अयलाह जहाँ विधि हरि सुखपानि ॥

कह विधि बचन सुनिअ रिसेस^{८२} । हेमगिरि भवन करि परयेस ॥

हेमगिरि भवन गौरी कुमारि । कथा वरिअ दिइ^{८३} वर त्रिपुरारि ॥

घटक चटक परिपञ्च^{८४} निधान । ताहि सिखाव दोसर के आन ॥

जाय कथा मुनि जानु मिलाय । लग्न पत्रिका छैव लिखाय ॥

करण कान्हाराम यह पदभान । हरखिस रिखि तब कएल पधान ॥

दोहा

प्रथमहि मुनिवर गयेछ तहाँ, जहाँ गिरिराज कुमारि ।

बोले मधुरस बचन तब, हरखित हृदय विचारि ॥४५॥

गीतं आसावरीरागे - ५१

भेल परम विसमादे^{८५} । कहय अवलह^{८६} समादे ॥

दुनु गिरिराजकुमारि । काम^{८७} जारल त्रिपुरारि ॥

सुनल न हमर^{८८} कहानी । मानल नारद-बानी ॥

तप भेल व्यर्थ तोहारे । आव की करव परकारे ॥

बोली विहुसित बानी । उचित कहल मुनि जानी ॥

जारल काम महेसे । तकर न मोहि अन्वेसे ॥

कहुओ बचन परमाने । मिव छाड़ि गति नहि आने ॥

करण कान्हाराम गावे । सुनि मुनि अति सुख पावे ॥

८० - फूल । ८१ - मे । ८२ - मुनिराज । ८३ - स्थिर । ८४ - छल करवा से

पट । ८५ - दुख । ८६ - कामदेव के जराओल । ८७ - कथन ।

सोरठा

देवे^१ हर-पद प्रीति, उमा प्रेम^२-लव-लीन^३ मन ।
मुनिवर बुझि मन धीति^४ करि प्रणाम गये हेमन्त^५ यह ॥४६॥

दोहा

गये हेमाचल निकट मुनि, नृपति कोन्ह मनमान ।
अरुप^६ पदारथ कइय कय, पुछिन्ह^७ कहीं पयान^८ ॥४७॥

(सप्तरिखि कथयति गीत गीह मालहरागे) - ५२

अयलहुं^९ हम बुझ पास नृपति सनु घटना एक विपारि ।
गीरि कुमारि नृपति घर सुन्दरि^{१०}, सुन्दर घर विपुरारि ॥
परम जोय^{११} सुन्दर घर सङ्कर, निन्दत नहि संसार ।
अनुमत करिय समाज सृजन लय, अओर^{१२} अपन परिवार ॥
प्रथम^{१३} रानि सनमानि विचारअ, तवन सङ्ग समाज ।
बरगुन एहन कतहु नहि भेटत, महादेव घर राज ॥
तीनू^{१४} लोकक सोक^{१५} नैवारथि, सूर मुनिमन सब दास ।
घटक-वचन मुनि ११ श्रुति छलि गेलहुं जहाँ निज रनिवात ॥
कुल पलिवार सृजन परिजन जत, सबहि हँकारि बोलाय ।
घटक-वचन मुनि सबहि सुनाओल, अनुमति कहिय बिदाय ॥
रानि सहित अनुमत सम्मति भेल सबक मिलल एक भाव ।
हरखि जमाम करिय सिखसङ्कर, करण कन्हाराम गाय ॥ ॥

५७ - पार्वती प्रेमक ओहो माया मे एकदम । ५८ - धर्म । ५९ - हिमालयक लय ।
६० - अर्घ्यक हेतु जल । ६१ - आनन्द । ६२ - योग्य । ६३ - पहिले । रानीके
सम्मान कय विचार करल ।

६४ - लोकक निवारण करथि । ६५ - हिमालय ।

१ - देवी । २ - लीलीन । ३ - पुछिन्ह । ४ - ० । ५ - अओ । ६ - तिति ।

छन्द--५३

पुछला मुनिवर पास^१ गिरिवर, कहल विधिक गकार यो ।
उमा-वर-हर करिय समुचित, तकर करिय विचार यो ॥
सुनि गिरिवर कीन्ह अनुमत मुनि लगन लिखाय यो ।
देख मुनिकर लगनपाती, चलल हरखित लाय यो ॥

दोहा

लग पाती तब सप्तरिखि, मुदित जले हरजाय ।
पाती दोन्ह विरञ्चि^२ कर, आनन्द मन अघिकाय ॥४८॥

लगनपथिका-गीत गायति - ५४

लगनपाती रिखि आनल, सब अन^३ जानल हे ।
ब्रह्मा बाँचि सुनाव, हरखः सव मानल हे^४ ॥
लेल पुमाय लगन विधि^५, सब भेल सिद्धी^६ हे ।
सुर मुनि परम अवन्द, पाओल^७ जेनव नीधी हे ॥
गगन दुन्दुभी बाजए, सब जन^८ गाजए हे ।
हरक बिथाह उछाह, साज सब साजए हे ॥
सुर^९ सुमन वरताओल, सिबहि चढ़ाओल हे ।
घर घर उधव वधाव, कन्हाराम गाजए हे ॥

दोहा

लगन बिदाए^{१०} लाए मुनि, सुनि सूर मुनि गन्धर्व ।
कहत साज बरियात के, सुरमण हरमण^{११} सर्व ॥४९॥

१० - लगनपर्वत के । ११ - ब्रह्माय हाथ मे । १२ - देवता कुल बरखओलनि ।
१३ - स्थिर कय । १४ - महादेवक गण ।

७ - मुनि पुछल । ८ - ० । ९ - ० । १० - धियो ।

११ - सीढ़ी । १२ - जनि सब । १३ - ० ।

(गिरिराज स्वयंम्बर आरम्भ करथि । तस्य गीतं गायति)--५५

कथा भेल मनमोल, दुहु दिस मानल हे ।
सुदिन सुघड़ी तकाय, स्वयंम्बर छानल हे ॥
हेमत भवन भरि नगर मोद मुदित मन हे ।
गौरी बिवाह उछाह देखब दूग कखन हे ॥
सेना नगर हकारि नारि सब आवए हे ॥
कोकिली बेन उचारि मङ्गल गीत गावए हे ॥
कीमुक देखि मनाइनि अवसर पाओल हे ।
दिग्ध-भूषण पट^१ चीर सबहि पहिराओल हे ॥
सबहुक छित उबवेग लागि रहल अति हे ।
कखन उमा सिर सिन्दूर मनाइनि देखति हे ॥
घर घेरज मन लाए कान्हाराम कवि मन हे ।
परसन होएब महेस पुरत अभिमत मन हे ॥

पुनः गीतं गायति - ५६

हाट बाट जत पुर महँ रे सब गली बजारे ।
रक्कनहि सबहि बन्धाओल रे, जगमग भल कारे ॥
कनक भवन भरि^४ पुर भेल रे, नृप बेल बनवाए ।
पंच छोटा लखि पड़ तहि रे धनपति समुदाए ॥
नृप मन्दिर मणिमय रचि रे, सीमा अधिकाए ॥
अमर^५ नगर देखि भवि^६ रह रे, सुररति ललचाए ॥
जनवासा नृप प्रथमहि रे रचि ललित विताने^७ ।
चित्र विचित्र उरेहुल^८ रे, कए तरहु मकाने ॥
व्याह वस्तु जगमह जत रे, तत भरल भजारे ।
कत सरजाम कयल नृप रे, तहि रहल सुमारे ।

१ - कोइलीक समान वाणी । २ - ऐशमी वस्त्र । ३ - सीताक ।
४ - नगर भरि । ५ - देवता लोकनि नगर के देखि । ६ - पल्लवाइत
छथि । ७ - चनवा । ८ - परिष्कृत कयल ।

कान्हाराम मन भगवति रे, ऐहि गृह अवशारे ।
बहौ कमी कोन बातक रे, नृप सबय समारे ॥

(अथ श्री महादेवक सिंगार, वरिआतक तैजारि । तस्य गीतं
गायति । गीतिका छन्द) -- ५७

सबहि कर सिंगार मन^१ सब जथा मोरि^२ बनाय हे ।
मोरि बेडल विविध थिखधर, फता बेल लटकाय हे ॥
साल^३ अओ लडमा^४ परिहरि^५, बाष छाल ओझाय हे ।
कान कुण्डल रुडमाला^६, कर कपाल गथाय हे ॥
गुनि रुडमाल गथाय पहिरल, माल कण्ठ लेखाय हे ।
भङ्ग भोजन मङ्ग मिर^७ बह, अङ्ग खाक^८ लगाए हे ॥
गरा सोम^९ उपवीत सुन्दर, बासुकी लपटाए हे ।
चन्द्र भाल बिसाल लोचन, एक अनल^{१०} घहाए हे ॥
भूत प्रेत पिशाच परिजन, नाच जोगनि घाए हे ।
करत गन गन मनहि मन गन थिकट भेग बनाए हे ॥
चलल हर वर वरद पर चढ़ि डमह लेल बजाए हे ।
जुत्थ^{११} जुत्थ बरात भूत गन, चलल अति हरखाए हे ॥
असुभ भेख देखि सिय केर, सुर^{१२} विद्या मुसुकाए हे ।
दुल्लह छाएक^{१३} दुल्लहि जग नहि, कोन करब जमाए हे ॥
उमत वर वरिआत उमत, समत केओ नहि जाए हे ।
कोन त्रिधि ससुरारि निबहुक, संग बाण न भाए हे ॥

१ - मनमोल । २ - महादेवक गण सम । ३ - मुकुट । ४ - चादरि ।
५ - छोड़ि । ६ - रुडमाल माला । ७ - छाउर । ८ - जवेज ।
९ - आगि धधकत अछि । १० - देवकी । ११ - योग्य ।

१२ - रुमाल । १३ - सिलह । १४ - जुत्थ ।

करण कवि कान्हाराम कह पुनि, सुनिअ मव मन लाए हे ।
२० जगतपति २१ यतिनाथ २२ सङ्कर, करव अपन बनाए हे ॥

(देवतामन बरात मचळति, तस्य गीतम्) - ५८

विष्णु धिरजिब २३ सुरपति, सुर मुनि किंदर २४ हे ।
साथि समाज बनाय, बल्लल बरात २५ हर हे ॥
विष्णु २६ सयन जगमगित, देखि भेटल सोक हे ।
हर दुल्लह अनुरूप, हसत पथ लोक हे ॥
विष्णु कहल विवि, सुनिअ सहित सुरराज हे ।
करक करक भए चलहु सैन २७ समाज हे ॥
हरिक वचन सुनि गङ्कर, मन मुसकाय हे ।
केरल हरगन २८ सकल, गृह्णी बजाय हे ॥
हरआज्ञा मन जानि, किरल मन धाए हे ।
प्रभुपद कएल प्रणाम, विकट रूप आए हे ॥
कान्हाराम भन हरगन, देखि सकल हे ।
हसल सकल हहाए, देव २९ सुरभूप हे ॥

गीतिका छन्द - ५९

भेख अमित अनेक बाहुन करत नाना रंग हे ।
देखि सयन २५ समाज सङ्कर, बिहूसि कए लेल रांग हे ॥
काहु नयन ३० न श्रवण नासा, कर तमासा धाए हे ।
काहु बाहु बिहून देखिअ, काहु बाहु घनेर ३१ हे ॥

२०—संतारक ईश । २१—संघासीक नाथ । २२—ब्रह्मा । २३—किन्दर
(देवगण विशेष) । २४—महादेवक वरियाती । २५—सौवनाम के ।
२६—सेना । २७—महादेवक गण । २८—देवता श्री देवराज ।
२९—सैन्य (आन दल) । ३०—ककरो आँखिये नहि न ककरहु फान नाक नहि ।
३१—बिहीन । ३२—बहुतो ।

३३ रिष्ट पुष्ट अनिष्ट धूसर, रङ्ग रूप कराल हे ।
३४ छीन तन कोपीन काहु न, भूखन कर कपाल हे ॥
अमुर ३५ इवान शृंगाल खर मुख, भरे सोनित गात हे ।
आसमहुं जे गर्ह करते चले सम्भु बरात हे ॥
कान्हाराम भन मन-भेख अगमित, कोन बरन ३६ जमाति हे ।
जले जात बरात भुत्तगन, करत अद्भुत भाति ॥

(मगपुर ३७ लोक वर वरिआत देखि गीत गायति) : - ६०

बरव चकल हर बल्ल विआहव, भूत प्रेत बरात मे माई ।
डिमि डिमि डमरु बजाव वृक्षभ ३८ पर, आक धुधुर खात मे माई ॥
गरा ३९ गरल, उर ४० फनिपाति लहुलहु, विभूति भरल भरि गात ४१ मे माई ।
पाट ४२ पटम्बर अम्बर तन नहि बाधछाल कहरात मे माई ॥
दिश ४३ परिधान लाज ४४ नहि तन ४५ महु छन छन धरए धेआन मे माई ।
मगपुर ४६ लोक देखि वर वाउर ४७, काहु न रहल मेआन मे माई ॥
वर वउराहु ४८ भेख विकट अति, देखो लागो घाय मे माई ।
एहन जमत वर कोन विआहव, देखितहि लोक डेराम मे माई ॥
धन्य हिवा ४९ तेहि माय घाय के, जे करए एहन जमाय मे माई ।
एहन जमत दुल्लह रांग दुल्लहिन, निवहव कोन उपाए मे माई ॥
कान्हाराम भन मुमरि सित मन, मुनहु सकल वर नारि मे माई ।
धन्य भाग अहिवात ४९ अचल तेहि, जेहि वर मिलु जिपुरारि मे माई ॥

३३ - हृष्ट (मोटापल) । ३४ - क्षीण शरीर ।

३५ - देख कुकुर गिदड गवहा सनक मुँहधला । ३६ - संघ

३७ - मार्ग मे नगरक लोग । ३८ - वृषभ (बसाहा) । ३९ - दण्ड मे विष । ४०

- छाती पर साप । ४१ - देह । ४२ - रेशमीबस्त्रक पहिरन । ४३ - दिशा रूपी

पहिरन (नाउट) । ४४ - देह मे । ४५ - मार्ग मे नगरक लोक । ४६ - बटाह ।

४७ - बटाह । ४८ - साहस । ४९ - सोभाय ।

पुनः दोसर ग्रामलोक उक्ति, गीतं गायति--६१

उमत् उमत्^१ वर, चलल बिधाह कर हे ।
आगे माइ उमत्^२ सङ्ग वरिआत, एहन वर के कर हे ॥
नगत्^३ सतत रह, लाज न सत मह हे ।
आगे माइ, भयम भ ल भरि गातु^४, एहन वर के कर हे ॥
बुढ़ सखर वर, लाय धुधर कर हे ।
आगे माइ, धर धर कपडत देह, एहन वर के कर हे ॥
डगमगात चल, नयन अतल^५ वर हे ।
आगे माइ, भूत प्रेत सिनेह, एहन वर के कर हे ॥
विशुल खटङ्ग^६ वर, अमुभ भेव वर हे ।
आगे माइ, देखइत परम भयान, एहन वर के कर हे ॥
धिकाह सुन्दर वर, कयल^७ कुरूप हर हे ॥
आगे माइ, कन्हाराम कवि भान, एहन वर के कर हे ॥

(राजा गिरिराजक सरिआती नेओता आब । तस्य गीतं
गायति मालव रागे) --६२

गिरि^१ लघू पैच सकल नृप^२ नेओतल, नदी नाला ताळावे^३ ।
वन सागर सभ नेओत पठाओल, मुदित^४ मनोहर भावे ॥
कामळी सुन्दर तनु^५ धरि धरि, चलल नेओत सब झारी ।
सङ्ग समाज सहित वर नारि, आगरि पिअहि पिआरी ॥

१०—उग्रनाथ (महादेव) । ११—उमत् वरिमाती संग मे । १२—नाइट ।
१३—देह मे । १४—आगि । १५—विशुल रूप मे सोटा । १६—महादेव कुरूप
बनल छथि । १७—पैच ओ छोट सभ पर्वत के । १८—राजा हिमालय ।
१९—आनन्दित । २०—देह ।

१ - गिरिराज । २ - तलवे ।

परम सिनेह मंगल पुनि करइत, पट्ट^१चल नृपति अवासे ।
आदर भाव सकल ३सनमानल^२ देल सुखद सुखवासे ॥
नगर सगर^३ छवि देखि मोहित छवि^४, विधिकृत अति लघु लागे ।
बाग तड़ाग कुप सरिता वन, मुभग समारल^५ आगे ॥
कञ्चन^६ कलस विलस वर घर घर, सोभा बरनि न जाए ।
५नारी पुरुष चतुर छवि सुललित, सुर मुनि मन ललवाए ॥
जगदम्बा जेहि नगर जनम लेल, से पुर अति अभिरामे ।
सुख सम्पति संभवा मङ्गल नित, अनत करण कन्हारामे ॥

गीत कुमरमक -- ६३

सरोवर^१ तट सब, ओ रे चलि भेली । कुमरमक उवाच करव गेली ॥
गीति नृसि^२ कत, ओ रे करइत । विविध वाजन सब बजइत ॥
कौमुद कर सब, ओ रे कत रङ्ग । नारि वृन्द आनन्द सङ्ग ॥
कुमरम गौरी केर^३, ओ रे जलन भेल । चिड़ड़ा^४ बिलहि खुइछा देल ॥
गौरी सहित चलु, ओ रे मनाइनि । भवन गमनसङ्ग गाइनि ॥
कन्हाराम भन ओ रे सुभरि हर । परिछि उमा लव गेलि वर ॥

गीत लावा भुजाउति--६४

लावा भुजय बैसलि बहिनियाँ, वीधि^१ निपुनियाँ हे ।
आहे, बहिनोप^२ मोरि^३ चङ्गाय बैसलाह, बलहा दहिनियाँ हे ॥
लावा भुजय बहिनियाँ, थोरे धनियाँ हे ।
आहे, ल वा भुजि कएल तैयार, की अचरे छपनियाँ हे ॥

६१ - सम्मानित कयल । ६२ - सुन्दरता । ६३ - वधाताक रचल सौन्दर्य
अत्यन्त तुच्छ लगैछ । ६४ - सजाओल । ६५ - सोनाक घट ।
६६ - पोलरि कछेर । ६७ - विधि करवा मे निपुण । ६८ - मुकुट ।

३ - सत् । ४ - नारि । ५ - निस् । ६ - कर । ७ - चिड़ड़ा बिलहि खुइछा देल ।
८ - मोरि ।

सुनह भैया कहनिजाँ^१, मांगु बहिनजाँ है ।
आहे, की देव मोहि इनाम, कि लवा-^२ भूजनिजाँ है ॥
कन्हाराम एह भनिजाँ, सुनु बहिनजाँ है ।
आहे, सबस थोक सोहार, कि जे मन मानिजाँ हे ॥

गीत विलौकीक--६४

शुभ शुभ कै बहरएलिह, आगे माइ, गवइत मङ्गल चार ।
कुल परिवार अपन जत, आगे माइ, गौरि लागलि सेहि द्वार ॥
विलौकी मांगु हे ॥
दुखि धान दए चुमावि है, आगे माइ, युग युग समाअहिवात ।
हिरमनि रत्न जतन कए, आगे माइ, देल मनाइनि हाथ ॥विलौकी०॥
कैओ देल औंठी मृतरिआ है, आगे माइ, कैओ देल मोतिक हार ।
कैओ देल टकड़ा मोहर है, आगे माइ, जकरा जे परकार ॥विलौकी०॥
सगन नगर धर फिरि फिरि है, आगे माइ, हरवित भेल अवास ।
परिछि सबहु घर गेलिहि आगे माइ, कन्हाराम कवि गाव ॥विलौकी०॥

दोहा--५०

नगरसमीप वरात जब आए, कीधि कहल ई बात ।
विश्र हजाम पठाविअ खबरि देव बरिआत ॥

ब्राह्मण हजाम आगमन गीत--६६

आएल ब्राह्मण सहित हजाम । कहए समाद बैसल नृपधाम ॥
नगर निकट आएल बरिआत । आविअ परिछि जात सरिआत ॥
ब्राह्मण नापित पएर धोआए । विविध प्रकारक भोजन कराए ॥
परिछए चलल बाजत सभ बाज । बरिआतिक सभ साज समाज ॥

६६ - निवेदन । ७० - लावाभूजाओन (लावा बूजक इनाम) ।

१ - प्रकाशित पोथी एतहि समाप्त अछि ।

नगर लोक सभ अति हरषाए । मातृका पूजा करए नृप जाए ॥
करण कन्हाराम एह पद भान । ब्राह्मण नापित गेल लए पान ॥

गीत मातृकापूजा--६७

तिल कुश लेल हेमकर, मातृका पूजा विधि कर है ।
अँकुरी अच्छत नैवेद, सोडह ठाम धर ॥
गोमय दूखि अनाओल, रत्निका बनाओल ॥
सोडह रत्निका के वरज, दए पतिआनी सोभन ॥
द्विजा^१ पड़ाधहु जाए, वसुधारा धृत डारि भेल मातृपूजा ॥
कन्हाराम भन हेमकर विधिकर ।
शुभ शुभ कए उठि गेला, नृपति मण्डप पर ॥

गीत सोहाम--६८

आइलि घोविनि दड़िआ हाथ कङ्कुरिआ है ।
तोहरा के धएल गवार, कि कएल एत बेरिआ है ॥
कएले बेरि अवेरिआ घोविनि छिनरिआ है ।
गौरिहि देहले सोहाम, होइछ बड़ बेरिआ है ॥
घोविनि पत्तारल औरिआ, दए निअ डरिआ है ।
सखन देव सोहाम, सुनल कत गरिआ है ॥
कन्हाराम भन एहि बेरिआ, घोबिनिक औरिआ है ।
गौरिहि देल सोहाम, पाओल लाल सड़िआ है ॥

बरिआत परिछय गीत गायति--६९

गज तुरङ्ग राजल तनकाल । बाजत बिबध बाजए अन्धकाल ॥
चहि चहि जने भेल तआर । जमा जोड़ा लए कमर कटार ॥
घाल दोआला अनेक पोशाक । पहिर लेल सभ एक सौ एक ॥
जगमग चीरा लेल पहीर । धुम गजान चहि लेल नृपवीर ॥

१ - एहि गीतक पाठ इतरतर भए गेल नुसारह ।

मणिमय भूषण लेल लमाये । मुदित चलल परिछए जमाय ॥
पहुत कवित्त लड़ावा भाट । नत्तक नूत करैत चल बाट ॥
आसमई गई होअ घनघोल । ककरो केओ बूझ नहि बोल ॥
सुवर सवार घोर कुदाव । घाड़ा कुदाव अति परभाव ॥
'सोहरा सुनि कतेक लोक धाय । भेल घमसान वरनि न जाय ॥
तेहि बिधि बलिष्ठ कएल पयान । लोकक लेल नहि रहल ठकान ॥
कान्हाराम जत भेल समान । तखनुक सोभा के कर बखान ॥

छन्द--७०

सहस्र एक मशाल लेमल, सीड़िक कओने ठेकान यो ।
भेल तेहन इजोत पुरभरि, राति तहि पहिचान यो ॥
आतशबाजी कतेक तरहक, मुलुक मुलुक आय यो ।
छुटैत होत अनोर बहुत दिस, जएसे घन चहराम यो ॥
छालटेम अनेक भए गेल, रोसनी बहुभाति यो ।
देखि वर बरिषाते चकित, उगहि दिनकर राति यो ॥
एहन सगर नगर तमासा पहिने नृप कएल अयोत यो ।
नृप मन्दिर महु भवन मएँ कत, करए मजिक इजोत यो ॥

(प्राचीन पुस्तकक '१११' संख्यक गीत सँ आगाँ)

गीतिका छन्द

गौरि शंकर व्याह, परम उछाह, मंगल बखान हे ।
जेहन मति गति, देल पशुपति, तेहन कएलहुँ गान हे ॥
कान्हाराम ई करत गोबर सुनिअ प्रभु त्रिपुरारि हे ।
टारि आरत कह कुतारथ, सुदृष्ट दृगहि निहारि हे ॥
जगतपति हर पुरिए अभिमत, सकल दोष निवारि हे ।
नाम अडरण डरण शङ्कर, दिअ पदारथ पारि हे ॥

१—विशेष चर्चा । २ -- मूल पोथीक एहि पौनी सँ स्पष्ट अछि जे गीत सं० ७० सँ
आगू ४१ गीत गीत अग्रस्त अछि ।

हरगौरि व्याह उछाह मङ्गल, गाव जे सुन कान हे ।
ताहि सुखसम्पत्ति सब बिधि, पुन पौवहि मान हे ॥
सुचित चित दए, पढ़हि गावहि, धरहि शिवपद ध्यान हे ।
सकल दोष निवारि शङ्कर, अभय देहि वरदान हे ॥

दोहा

राग अनेकक गीत सभ, कीन्ह प्रमाण बखान ।
गीत गीत के भास सौँ, गान करअ मतिमान ॥
तखन सुनत सलिलत परम, लागत अति अभिराम ।
छन्द भङ्ग पद करिअ जगु, सबकेँ कह कान्हाराम ॥

छन्द

हरजीवदासक तनय हलधर, तामु सत कान्हाराम यो ।
'कर्ण' मेथिल वंश 'गङ्गक' विदित जग सबठाम यो ॥
देश तिरहुत मध्य 'केडटि', प्राग अतिहि प्रशंस यो ।
तहाँ बसत कवि कान्हाराम, कत बसत बिप्र सुवंश यो ॥
इति श्री गौरीशङ्कर व्याह उत्सव चरित नाम नाटकं
करण कान्हारामदास विरचितं सम्पूर्णम् ॥

